पातंजल योग सूत्र में 'वैज्ञानिक अध्यात्मवाद' का संप्रत्यय एवं प्रारूप : एक समीक्षात्मक अध्ययन

मानव चेतना एवं योग विज्ञान विषय में
पी-एच.डी. उपाधि की प्राप्ति हेतु
प्रस्तुत शोध प्रबंध का प्रारूप

2008

निर्देशक
डॉ. सुरेश लाल बर्णवाल
सहायक प्रोफेसर

शोध छात्र
असीम कुलश्रेष्ठ
एम.एस.सी.

मानव चेतना एवं योग विज्ञान विभाग
देव संस्कृति विश्व विद्यालय
हरिद्वार - 249411

- अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :

भारतीय योग दर्शन के इतिहास में पातंजल योग दर्शन अपनी एक अलग विशेषता रखता है। महर्षि पतंजलि ने अपने योग सूत्रों को तर्क, तथ्य और प्रमाण के आधार पर सूत्रबद्ध किया है; उनका उद्देश्य मानव विकास के सभी आयामों को स्पर्श कर उसे प्रभावित करने का है। **महर्षि पतंजलि अपने योग सूत्रों में कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक जानकारी प्रदान करते हैं।**[1] प्रसिद्ध वैज्ञानिक **इरविन श्रोडिंगर (1964)** के अनुसार - **"तथ्यों का अधिकतम पूर्णता के साथ न्यूनतम् शब्दों में वर्णन विज्ञान कहलाता है।"**[2] महर्षि ने उनकी रचना केवल बुद्धि विलास (Intlectual Amusement) के लिए नहीं की थी। ये सूत्र चेतना के उन्नयन की व्यवहारिक प्रक्रिया समझाने, अधिक गहरे ज्ञान की प्राप्ति, मन की संभावनाओं के अन्वेषण और अन्ततः उसके पार जाने के उद्देश्य से लिखे गये हैं। योग सूत्र मुख्यतः अभ्यासाभिमुख (Practice Oriented) हैं। वे समाधि की मात्र बौद्धिक मीमांसा (Intlectual Descriptions) नहीं करते हैं।[3] अनेक श्लोक ऐसे तथ्यों का प्रतिपादन करते हैं, जो सामान्य सांसारिक अनुभवों और समझ के परे होते हैं। इन सूत्रों में पथ (Path) और पथ प्रदर्शक (Path -Guide) दोनों का तर्क संगत वर्णन हैं। स्थूल से सूक्ष्म की यात्रा इन सूत्रों के माध्यम से पूर्ण होती है।[4]

महर्षि पतंजलि अपने निष्कर्षों को रहस्यमय संकेतों के रूप में नहीं, वैज्ञानिक सूत्रों के रूप में प्रकट करते हैं। उन्होंने मनुष्य के अंतर्जगत के निरपेक्ष नियमों का नियमन करके सत्य और मानवीय मन की चरम कार्य प्रणाली के विस्तार का अन्वेषण और प्रतिपादन किया है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखना और आंतरिक जगत में प्रवेश करना, करीब-करीब असंभव प्रतीत होने वाली संभावना है। वे अपने प्रयोगों के बारे में , प्रयोगों से प्राप्त निष्कर्षों के बारे में एक गणितज्ञ, एक तर्कशास्त्रज्ञ, एक महावैज्ञानिक की भांति सत्यों को स्पष्ट करते हैं।

महर्षि पतंजलि ने अपने सैकड़ों-सैकड़ों प्रयोग करके उनके निष्कर्षों को सूत्रबद्ध किया है। इन सूत्रों के सहारे जब भी कोई चाहे प्रयोग को दुहरा सकता है।[5] वे साधना की अनुशासन की नींव बनाते हैं। यह नींव सबके लिए है। यदि कोई उस नींव पर चल पड़ा तो उस शिखर पर निश्चित रूप से पहुंच जायेगा। वे विच्छेदन करते हैं, विश्लेषण करते हैं, पर उनका मकसद संश्लेषण है। वे केवल संश्लेषण के लिए विश्लेषण करते हैं। वे बुद्धि से बातें करते हैं, पर उनका उद्देश्य, उनका लक्ष्य हृदय ही है। वे हमें तर्क के द्वारा तर्क के पार ले जाना चाहते हैं। वे कमबद्ध ज्ञान के साथ और उसके निश्चित परिणाम के साथ उसकी महिमा बताते हैं। हमारी उंगली पकड़कर चेतना के शिखरों की और ले जाते हैं,

---

[1] स्वामी सत्यानन्द सरस्वती (1994), मुक्ति के चार सोपान, पृष्ठ- 4 प्रयोग

[2] My Views of the world, 1964, p- 3

[3] स्वामी सत्यानन्द सरस्वती (1994), मुक्ति के चार सोपान, पृष्ठ- 2

[4] स्वामी सत्यानन्द सरस्वती (1994), मुक्ति के चार सोपान, पृष्ठ- 2

[5] डॉ. प्रणव पण्ड्या (2002)- चेतना विज्ञान - अंतर्जगत् के दो विशिष्ट वैज्ञानिक, अखण्ड ज्योति, मार्च, 2002, पृष्ठ - 45

उसकी फलश्रुति बतलाते हैं। ऐसा करने में जो बाधाएं आयेगी उनसे सचेत करते हैं, उनके निराकरण के उपाय सुझाते हैं।[6] महर्षि पतंजलि ने अपने सूत्रों में चेतना के स्वरूपों का नियमन करने हेतु सूत्रों को सूत्रबद्ध किया है।[7]

प्रस्तुत शोध की रूपरेखा में भी शोधार्थी का उद्देश्य **महर्षि पतंजलि के योग दर्शन में तर्क, तथ्य और प्रमाणों से पूर्ण सूत्रों का अध्ययन कर- वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के संप्रत्यय और प्रारूप को चरणबद्ध रूप से स्थापित करने का है।**

आज विचारों की समग्रता नष्ट प्राय: है, "मनुष्य के खण्ड - खण्ड का चिन्तन - विश्लेषण चल रहा है। उसके अस्तित्व के एक भाग को समग्र शास्त्र का रूप दे दिया गया है। ये सब हैं तो उपयोगी, पर समग्र मानव को समझे बिना उसकी मूल प्रकृति और प्रवृत्ति पर ध्यान दिये बिना एकांगी आंशिक समाधानों से कुछ बनेगा नहीं। उस महाविद्या की ओर से क्यों उदासी है? जिसे समग्र मानव का विज्ञान कहा जा सके।"[8]

पिछले दो सौ वर्षो में इतने अधिक शास्त्र - ज्ञान, विज्ञान की धाराएँ ढूँढ़ निकाली गई हैं जितनी पहले कभी न थी। इसके बाद भी उदासी के बादल छँटे नहीं, गहराते ही गए, कारण उपर्युक्त सवाल के समाधान में बरती गयी उदासीनता है।

ज्ञान के खोजियों, जीवन के मीमांसकों और अन्वेषित प्रणालियों का पर्यावलोचन करें तो पाऐंगे- इनके मुख्यत: तीन वर्ग हैं -

एक जिनने जीवन का बाह्य परिवेश देखा - केन्द्र से दूर रहकर परिधि की ओर उन्मुख रहे। इस परम्परा ने व्यक्ति को आत्म-गरिमा से हीन भारवाहक श्रमिक बना दिया। आज जिसे विज्ञान कहते हैं, वह इसी परम्परा का अनुयायी है।

"इन्ट्रोडक्शन ऑफ फिलासॉफी" के लेखक **जी.टी. डब्ल्यू पेट्रिक** के शब्दों में, "विज्ञान मूल्यों, जीवन तथा मानवीय आचरण - जैसे अनिवार्य प्रश्नों के समाधान की चेष्टा नहीं करता जो हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।"[9] इसके विपरीत जिन्होंने सोचा उन्होंने क्रिया की निस्सारता मान ली। मनो संकल्पनाओं से घिरे रहने के कारण वस्तु जगत को झुठलाने के प्रयास में ही अपने कर्तव्य और पुरूषार्थ की इतिश्री समझ ली।[10]

---

[6] डॉ. प्रणव पण्ड्या (2002)- चेतना विज्ञान - अंतर्जगत् के दो विशिष्ट वैज्ञानिक, अखण्ड ज्योति, मार्च, 2002, पृष्ठ - 46

[7] स्वामी सत्यानन्द सरस्वती (1994), मुक्ति के चार सोपान, पृष्ठ- 5

[8] डॉ. प्रणव पण्डया (1992) - युग पुरुष पं. श्रीराम शर्मा आचार्य : वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के जन्मदाता, अखण्ड ज्योति, दिसम्बर, 1992, पृ- 54

[9] डॉ. प्रणव पण्डया (1992) - युग पुरुष पं. श्रीराम शर्मा आचार्य : वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के जन्मदाता, अखण्ड ज्योति, दिसम्बर, 1992, पृ- 54

[10] डॉ. प्रणव पण्डया (1992) - युग पुरुष पं. श्रीराम शर्मा आचार्य : वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के जन्मदाता, अखण्ड ज्योति, दिसम्बर, 1992, पृ- 54

बेकन की भाषा में, " स्वयं को दार्शनिक समझने वाला जीव अपने ही बुने तन्तुजाल में फॅसता- उलझता, उलझाता रहता है। क्योंकि उसने मान रख है, दर्शन सोचने की पद्धति है, करने की नहीं। भावना और क्रिया से विलग रहकर वह स्वयं को मानवता का कितना भी हित साधक कहे। पर उसने स्वयं का भी कितना हित साधन किया है - इस पर भी समय ने अमिट प्रश्न चिन्ह लगा दिया है।"[11]

इस प्रश्न का हल खोजने वालों ने मानवी अस्तित्व के नये केन्द्र का स्पर्श किया। उसी को सब कुछ मान जीवन की प्रश्नावली के नये समाधान खोजने शुरू किये। उनका कार्य स्तुत्य होते हुए भी समग्रता के अभाव में मनुष्य का कुछ अधिक हित नहीं कर सकता। भावनाएँ उत्तम हैं, पर क्रिया का अभाव उन्हें पंगु बना देता है। चिन्तन न होने पर ये कोरी भावुकता होकर रह जाती हैं। बौद्धिक विवेचना से पल्ला छुड़ा बैठने के कारण ही इस पक्ष के अनुयायी रहस्यवादी कहलाए।

क्रिया, चिन्तन और संवेदना - जीवन के तीन पक्ष अपने एकाकीपन में मनुष्य जाति को जीवन का अर्थ नहीं दे सकते। वह कला नहीं सिखा सकते, जिससे अनगढ़ता- भद्दापन मिट सकें । इस कला का अभाव ही है, जिसके कारण समृद्धियों के ढ़ेर में दबा-बौद्धिक भार से लदा मनुष्य करूण विलाप कर रहा है।[12]

धर्म, दर्शन और विज्ञान , मानवीय अस्तित्व से उपजी तीन प्रबल विचार शक्तियां हैं। किन्तु इनका अलगाव- आपसी टकराव मानव -जीवन में वरदानों की सृष्टि न कर सका। जब संवेदना- चिन्तन और कर्म ही आपस में टकराते रहेंगे, तब परिणाम संहार के अतिरिक्त क्या होगा? उज्जवल भविष्य की संसिद्धि का सिर्फ एक उपाय है - इनका सामंजस्य।[13] 'वैज्ञानिक अध्यात्मवाद' के रूप में यही है। इस नये तत्वदर्शन के अनुसार क्रिया और चिन्तन दोनों जहां मिल सकते हैं, वह स्थान संवेदना है। इस मिलन बिन्दु को अपने मूल स्त्रोत के रूप में पहचानना, स्वीकारना ही वह उपाय है, जिससे मनुष्य का अब तक के अपने विकास को बरकरार रख संभावनाओं के नए द्वार खोल सकता है।

"वैज्ञानिक अध्यात्मवाद" वादों के ढेर में नए प्रकार की सर्जना नहीं, बल्कि ऐसा कुछ है जहॉं सभी वाद समा जाते हैं । जहां सबको उसका स्थान मिल जाता है। 'समुद्र माय: प्रविशन्ति यद्वत्' - समुद्र नदी नहीं है, परन्तु सभी नदियां समुद्र में अपना स्थान ग्रहण करती है। इसी भांति इस चिन्तन प्रणाली से जीवन के सभी अंग - उपांग अपने चरम विकास की कला सीखते हैं।[14]अभी यह मानते रहे हैं कि विज्ञान वह है जो दृश्य माध्यमों को आधार बनाकर हमें प्रत्यक्ष रूप से यह समझाता है कि कोई भी घटनाक्रम या क्रिया - प्रतिक्रिया किस कारण होती है, जबकि अध्यात्म

---

[11] डॉ. प्रणव पण्डया (1992) - युग पुरुष पं. श्रीराम शर्मा आचार्य : वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के जन्मदाता, अखण्ड ज्योति, दिसम्बर, 1992, पृ- 54

[12] डॉ. प्रणव पण्डया (1992) - युग पुरुष पं. श्रीराम शर्मा आचार्य : वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के जन्मदाता, अखण्ड ज्योति, दिसम्बर, 1992, पृ- 56

[13] डॉ. प्रणव पण्डया (1992) - युग पुरुष पं. श्रीराम शर्मा आचार्य : वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के जन्मदाता, अखण्ड ज्योति, दिसम्बर, 1992, पृ- 55

[14] डॉ. प्रणव पण्डया (1992) - युग पुरुष पं. श्रीराम शर्मा आचार्य : वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के जन्मदाता, अखण्ड ज्योति, दिसम्बर, 1992, पृ- 55

मूलतः चेतना विज्ञान को प्रगति की दिशा देने वाली एक परोक्ष विधा है, उसे विज्ञान का प्रत्यक्षीकरण का जामा नहीं पहनाया जा सकता। किन्तु श्रद्धा - भावना- संवेदना भी विज्ञान है, जिसे आध्यात्मिक प्रयोगों द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। **प्रसिद्ध दर्शन शास्त्री बिल डूरेन्ट** ने अपनी पुस्तक **दि स्टोरी आफ फिलॉस्फी** में लिखा है, विज्ञान का आरम्भ दर्शन में होता है।

युग दृष्टा अर्थात् काल पर चेतनता के साथ दृष्टि रखने वाले **आचार्य प. श्रीराम शर्मा** ने **1947** में अपनी कृति **"वैज्ञानिक अध्यात्मवाद"** में कहा है कि विज्ञान भौतिकता को बढ़ावा देता है और अध्यात्म आत्मिकता को । व्यक्ति का संबंध इन दोनों छोरों से रहता है। अतः आने वाला समय विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय का होगा।

अध्यात्म व विज्ञान की दोनों धाराएं अन्तराल की जिज्ञासा से ही प्रस्फुटित हुई हैं। केवल अन्तर है दर्शन के **अथातो ब्रह जिज्ञासा** के स्थान पर विज्ञान में **अथातो प्रकृति जिज्ञासा** है।[15] **रूसो** ने भी विज्ञान एवं दर्शन के समन्वय पर जोर देते हुए कहा है, विज्ञान समाज की मान्यताओं की नई व्यवस्था प्रस्तुत कर सकता है तो दर्शन इस नई व्यवस्था को सुन्दर, उपयोगी एवं स्वच्छ रूप देता है।[16]

महान वैज्ञानिक **अल्बर्ट आइंस्टीन** ने कहा है, विज्ञान अपने अन्वेषणों से सत्य धर्म को अधिक गंभीर रूप प्रदान करता है।[17]

पं. श्रीराम शर्मा ने कहा है, "अध्यात्मवाद वह महाविज्ञान है जिसकी जानकारी के बिना भूतल के समस्त वैभव निरर्थक और जिसके थोड़ा सा भी प्राप्त होने पर जीवन आनन्द से ओत-प्रोत हो जाता है। संसार में सीखने और जानने योग्य अनेकों वस्तुएं हैं पर सबसे पहले जिसे जानने और हृदयंगम करने आवश्यकता है वह - वैज्ञानिक अध्यात्मवाद ही है।"[18] आज युग की मांग भी यही है।

विज्ञान सत्य का अनुसंधान करता है, परन्तु इस अनुसंधान का आधार पदार्थ है। विज्ञान की सीमाएँ हैं तर्क और तथ्य पर आधारित पदार्थ की वास्तविकता का ज्ञान करना परन्तु पदार्थ के समाप्त होते ही विज्ञान भी सीमीत हो जाता है, वहीं से चेतना की यात्रा प्रारम्भ होती है।[19]

श्रीअरविन्द के अनुसार, अतिभौतिक प्रकृति के नियम और संभावनाओं को जाने बिना विज्ञान का वास्तविक अनुसंधान पूर्ण नहीं हो सकेगा। अतः अनुसंधान एवं अन्वेषण की पूर्णता के लिए तर्कबुद्धि के साथ अंतर्प्रज्ञा का समावेश आवश्यक है, तभी वैज्ञानिक अध्यात्मवाद रूपी नवीन युग का सूत्रपात हो सकेगा।[20]

आज घटनाओं के रूप में कार्य तो है, पर उसका कारण नहीं ज्ञात है, उसका science विकसित नहीं है। हम आध्यात्मिक घटनाओं की पुनरावृत्ति नहीं कर सकते क्योंकि हम उसका कार्य-कारण का सिद्धान्त नहीं जानते, उसके विज्ञान को नहीं जानते।

---

[15] राधाशरण अग्रवालः विज्ञान तथा अध्यात्म-एक दूसरे के पूरक हैं अथवा विरोधी ?, साकल्य रश्मि, ज -मार्च 2003, पृष्ठ 76 - 77

[16] राधाशरण अग्रवालः विज्ञान तथा अध्यात्म-एक दूसरे के पूरक हैं अथवा विरोधी ?, साकल्य रश्मि, ज -मार्च 2003, पृष्ठ 76 - 77

[17] out of my later years, page 21

[18] आचार्य, पं. श्रीराम शर्मा (1947) - सबसे पहले अध्यात्मवाद की शिक्षा प्राप्त कीजिए, अखण्ड ज्योति, जनवरी 1947, पृष्ठ-1

[19] डॉ. प्रणव पण्डया (2004) - विज्ञान और अध्यात्म का मिलन अवश्यसंभावी, अखण्ड ज्योति, मई, 2008, पृ- 23

[20] डॉ. प्रणव पण्डया (2004) - विज्ञान और अध्यात्म का मिलन अवश्यसंभावी, अखण्ड ज्योति, मई, 2008, पृ- 4

आज के विद्वान अध्यात्म को इसलिए अवैज्ञानिक मानते हैं क्योंकि वहां कार्य तो है परन्तु उस कार्य को पीछे से संचालित करने वाला कारण अदृश्य एवं अस्पष्ट है। इसलिए अध्यात्म को रहस्यमयी घोषित किया गया।

अध्यात्म की वैज्ञानिक प्रकृति उसका प्रारूप और तकनीक का अध्ययन ही वैज्ञानिक अध्यात्मवाद है।

आध्यात्मिक अनुशासन व्यक्ति को मर्यादाओं में बाधित रखते थे परन्तु कालक्रम में जुड़ी रहस्यवादी घटनाओं और परम्पराओं ने उसे विकृत रूप दे दिया और जन साधारण ने अध्यात्म के वास्तविक स्वरूप को न पहचानकर उसके विकृत रूप को गृहण किया जिससे अध्यात्म के सम्बंध में अविश्वास उत्पन्न हो गया। वह आध्यात्मिक मान्यताओं को अस्वीकार करने लगे। आज जन साधारण की मनोभूमि किसी भी विषय को बुद्धिसंगत ढंग से समझने की है। आज तर्क, तथ्य, प्रमाण, उदाहरण को विज्ञान माना जाता है। इन बदली हुई परिस्थिति में अध्यात्म को उसी पृष्ठभूमि में प्रतिपादित करना पड़ेगा। सही आधार पर किए गए प्रतिपादन जब मनुष्य के अन्तःकरण में बैठ जाते हैं तो उनके अनुसार वे आचरण भी करते हैं। यदि अध्यात्मवादी मान्यताओं का आज विज्ञान, तर्क और प्रमाणों के आधार पर प्रतिपादन कर सकते हैं तो निस्संदेह जन साधारण को उसे स्वीकार करने में कोई आपत्ति न होगी।[21]

तर्क एवं प्रमाण की अपनी उपयोगिता है। विज्ञान ने अपना सतत विकास इसी आधार पर किया है। परीक्षण की कसौटियों पर कसने के बाद उसने अपना वर्चस्व सिद्ध किया है। उसकी प्रत्यक्षवादी मान्यताएँ परीक्षण किए जाने के बाद ही प्रमाणिकता प्रस्तुत कर सकी हैं।[22]

केवल कर्मकाण्डों का अनुसंधान करते, श्रद्धा, विश्वास के नाम पर मान्यताएँ अपनाने को आज का बौद्धिक वर्ग तैयार न होगा। इन कर्मकाण्डों के साथ जीवन के सूत्र - सिद्धान्तों का दार्शनिक क्रम भी होना चाहिए।[23]

ऋषि प्रणीत ग्रन्थों में न केवल ज्ञान - विज्ञान की विभिन्न धाराओं का समावेश मिलता है वरन् उदात्त जीवन और आध्यात्मिक दृष्टिकोण के उच्च आयामी मूल्यों का निर्धारण भी करते हैं।[24]

दर्शन ही विचार और आचरण का मूल आधार है। इसलिए ईश्वर, आत्मा, धर्म, स्वभाव, कर्मफल आदि के दार्शनिक सिद्धान्तों का सही ढंग से प्रतिपादन करना होगा। अध्यात्म के दार्शनिक सिद्धान्तों का विज्ञान, तर्क, प्रमाणों के आधार पर प्रतिपादन कर सके तो निस्संदेह जनमानस को पुनः उसी प्रकार सोचने और करते रहने को तत्पर किया जा सकता है, जिस पर आरूढ़ रहकर भारतीय जनता लाखों वर्षों से समस्त विश्व का प्रकाशपूर्ण मार्गदर्शन करती रही है।[25]

---

[21] आचार्य, पं. श्रीराम शर्मा (1968) - वैज्ञानिक अध्यात्म के प्रतिपादन में बढ़ते कदम, अखण्ड ज्योति, अगस्त 1968, पृष्ठ-37

[22] आचार्य, पं. श्रीराम शर्मा (1980) - धर्म तर्क के न्यायालय में, अखण्ड ज्योति, नवम्बर 1980, पृष्ठ-11

[23] आचार्य, पं. श्रीराम शर्मा (1988) - अध्यात्म और विज्ञान का मिलन किस स्तर पर हो, अखण्ड ज्योति, जून 1988, पृष्ठ-10

[24] आचार्य, पं. श्रीराम शर्मा (1986) - आध्यात्मिक साम्यवाद की दिशाधारा, अखण्ड ज्योति, दिस 1986, पृष्ठ-21

[25] आचार्य, पं. श्रीराम शर्मा (1968) - वैज्ञानिक अध्यात्म के प्रतिपादन में बढ़ते कदम, अखण्ड ज्योति, अगस्त 1968, पृष्ठ-38

वैज्ञानिक अध्यात्मवाद, विज्ञान और अध्यात्म को लेकर कई मत प्रचलित है और अनेक दार्शनिकों के अपने अलग-अलग मत है परन्तु जितनी स्पष्टता पं. श्रीराम शर्मा आचार्य प्रस्तुत करते हैं, उतनी अन्य के मत और कथन से स्पष्ट नहीं होती। प्रस्तुत शोध पातंजल योग सूत्र में वैज्ञानिक अध्यात्मवाद का संप्रत्यय और प्रारूप में पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के मत अनुरूप वैज्ञानिक अध्यात्मवाद को पातंजल योग दर्शन में तर्क, तथ्य और प्रमाण से पूर्ण सूत्रों का अध्ययन कर निर्धारित किया जायेगा।

पातंजल सूत्रों के माध्यम से अनेकों योगियों (जैसे- स्वामी विवेकानन्द, स्वामी शिवानन्द, सत्यानन्द सरस्वती आदि) तथा अनेकों गृहस्थों (जैसे -रामकृष्ण परमहंस, श्यामाचरण लाहिड़ी, आचार्य पं. श्रीराम शर्मा आदि) ने जीवन के विविध क्षेत्रों के उच्च शिखरों को प्राप्त किया है, प्रस्तुत शोध में शोधार्थी का उद्देश्य महर्षि पतंजलि के योगसूत्रों में विज्ञान (Science of Matter) तथा अध्यात्म (Science of Soul) के समन्वय 'वैज्ञानिक अध्यात्मवाद' (Scienctific Spirituality) को जनसाधारण के लिए प्रस्तुत करना है। जिस हेतु शोधकर्ता ने महर्षि पतंजलि के योग सूत्रों एवं वैज्ञानिक अध्यात्मवाद से संबंधित हुए शोध कार्यो का सर्वेक्षण किया है जिसमें शोधकर्ता ने पातंजल योग दर्शन के संबंध में पाया कि पातंजल योग सूत्र हमेशा से ही विचारकों के शोध का विषय रहा है। इसके संबंध में परिवर्ती रचनाएँ प्राप्त होती हैं; जिसमें **योग सूत्र के व्यासभाष्य** पर आधारित पहली विश्वसनीय टीका वाचस्पति मिश्र (841 ई.) द्वारा तत्ववैशारदी टीका तथा वाचस्पति मिश्र के तत्ववैशारदी टीका सूत्रों पर **भोजराज** द्वारा 'राज-मार्तण्ड' नामक वृत्ति (11 वी. शताब्दी ईसा) लिखी गयी। तत्पश्चात् आचार्य विज्ञान भिक्षु द्वारा योग भाष्य पर आधारित वार्तिक 'योगवार्तिक' (16 वी. शताब्दी), नागोजी भट्ट द्वारा 'छाया' (17 वी. शताब्दी), रामानन्दयति द्वारा 'मणिप्रभा' (18 वी. शताब्दी), नारायण तीर्थ द्वारा 'सूत्रार्थबोधिनी' तथा 'योग दर्शन' (18 वी. शताब्दी) तथा स्वामी हरिहरानन्द आरण्य द्वारा 'भास्वती टीका' उपादेय हैं तथा आज के युग से प्राप्त शोध साहित्य सर्वेक्षण इस प्रकार है:

<u>साहित्य सर्वेक्षण :</u>

- **डॉ. प्रणव पण्डया (Dr. Pranav Pandya, 2006)** पातंजल योग सूत्र पर अपनी पुस्तक **"अंतर्जगत की यात्रा का ज्ञान विज्ञान"** में विशद् वैज्ञानिक व्याख्या करते हैं। विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय के लिए प्रस्तुत प्रयोगशाला ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान के प्रमुख का कहना है कि महर्षि पतंजलि अपने निष्कर्षो को रहस्यमय संकेतों के रुप में नहीं, वैज्ञानिक सूत्रों के रुप में प्रकट करते हैं। वे मनुष्य के अंतर्जगत के निरपेक्ष नियमों का निगमन करके सत्य और मानवीय मन की चरम कार्यप्रणाली के विस्तार का अन्वेषण और प्रतिपादन करते हैं। लेखक साथ ही

वैज्ञानिक अध्यत्मवाद के संप्रत्यय को युग के सामने लाने वाले आचार्य पं.श्रीराम शर्मा को महर्षि पतंजलि के साथ ही अध्यात्मवेत्ताओं की दुनिया का आइंसटिन मानते हैं।

- **कालीदास जोशी (Kalidas Joshi, 2004)** द्वारा **"Human Mind in Patanjali's Yoga Sutra: How Far present day Psychology corborates."** विषय पर शोध पत्र लिखा गया । शोध पत्र में बताया गया है कि प्राचीन मनोविज्ञान के रूप में प्रतिष्ठित पातंजल योगसूत्र में वर्णित मानव मन की प्राचीन धारणा ने आधुनिक मनोविज्ञान के प्रकाश में पुन: आगमन किया है। पतंजलि की पूर्वधारणा जैसे आत्मा की नित्यता जन्म - जन्मान्तर तक संस्कारों का संचित होना तथा वह विचार जिसमें मन वस्तु के समझने के लिए अपना स्वरूप निर्धारित करता है। कर्म और पुनर्जन्म आधुनिक मनोविज्ञान के आधारभूत सिद्धान्त के सन्दर्भ में असंगत है। मानव मन के महर्षि पतंजलि के कथन किसी भी प्रकार दूसरे भारतीय दार्शनिक परम्परा के अनुसार मतभेद नहीं रखते हैं, यद्यपि आधुनिक मनोविज्ञान इस मत के साथ सहमत नहीं है।

- **सुरेन्द्र कौर आर्य (Surendra Kaur Arya, 2004)** द्वारा लिखित पुस्तक - 'योग दर्शन एवं मनोविज्ञान' में योग दर्शन में वर्णित बुद्धि, स्मृति, संज्ञान के संप्रत्ययों का वर्णन करने के साथ ही योग सूत्रों में मनोवैज्ञानिक रोगों के निदान एवं उनका समाधानों का भी वर्णन करते हैं। जिनमें मन का प्रशिक्षण अर्थात् ध्यान, मानसिक विश्रांति तथा श्वांसों का नियमन अर्थात् प्राणायाम सम्मिलित हैं।

- **सेथु राव एवं वी.एस. माधव (Sethu Rao & V.S madhav 2003-04)** ने **Alterted consciousness- Pathology and treatment** नामक शीर्षक से शोध पत्र प्रस्तुत किया। जिसमें बताया गया है कि पातंजल योग सूत्र में वर्णित निर्माण-चित्त, जिसका उत्पादन ध्यान के माध्यम से किया जाता है; को आधि और व्याधि की मन: चिकित्सा के साथ - साथ व्यक्तित्व और आध्यात्मिक विकास के लिए प्रस्तुत किया जा सकता है।

- **डॉ. प्रतिभा रानी द्विवेदी (Dr. Pratibha Rani Dwivedi, 2000)** द्वारा 'योग प्रतिभा' नामक अपने शोध में पातंजल योग दर्शन के सूत्रों एवं व्यास भाष्य का मात्र अनुवाद ही नहीं किया है अपितु 'योग प्रतिभा' नामक अपनी टीका में जटिल स्थलों एवं तकनीकी पदों को भी स्पष्ट किया है।

- **के.एस. जोशी (K.S. Joshi, 1998)** ने "महार्षि पतंजलि तथा जे. एस. कृष्णमूर्ति- कितने दूर? कितने पास?" शीर्षक से लिखे अपने शोध पत्र में महर्षि पतंजलि तथा जे. एस. कृष्णमूर्ति के मतानुसार योग के अनुकरण मार्ग में प्रगति के क्रमिक विधियों की मान्यता के सन्दर्भ में निष्पक्ष खोज प्रस्तुत करता है। महर्षि पतंजलि योग कि आठ अगों को अनुशासित करने में अधिक विश्वास प्रस्तुत करते है। इन आठ चरणों को योग साधना के लिए अष्टांग योग

नाम से प्रसिद्ध है, यद्यपि कृष्णमूर्ति मुक्ति प्राप्त के लिए किसी भी शर्त और विधि के प्रयोग हेतु कठोर मत के पालन को अस्वीकार करते हैं। शोधकर्ता दोनों अवधारणाओं के बीच संश्लेशण करता है कि सबीज समाधि से पहले एक क्रमबद्ध उन्नति आवश्यक है, यद्यपि निर्बीज समाधि की प्राप्ति के लिए सभी क्रमिक उन्नति के प्रयासों की समाप्ति के साथ-साथ सभी आदर्शों, विश्वासों तथा शर्तों को समाप्त करना होता है।

- **बी.के.एस. आयंगर (B.K.S. Iyengar,1998)** ने "योग और शांति" विषय शीर्षक शोध पत्र प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने बताया कि महर्षि पतंजलि, शरीर और मन की कार्य प्रणाली का गहन आन्तरिक परीक्षण करते हैं और मानव की सूक्ष्म इन्द्रियां, मन, बुद्धि और चेतना को स्थिर और शांत करने के लिए विभिन्न मार्ग बताते हैं। योग के सम्मानीय अभ्यास एवं योग की अग्नि शरीर, मन- बुद्धि और चेतना की अशुद्धि को नष्ट करता है और सर्वोच्च आध्यात्मिक उन्नति जो कि व्यक्ति को शाश्वत आनन्द और शांति का सुख देती हैं, को प्राप्त कराता है। योग केवल हमको मनोशारीरिक रूप से परिवर्तित नहीं करता बल्कि योगाभ्यासी के जीवन मे मित्रता, भाव, संवेदना युक्त, प्रेम दयाभाव, करूणा आदि मानवीय मूल्य प्राप्त होते हैं। पतंजलि द्वारा वर्णित योग के आठ चरण ही केवल वह कला, दर्शन और विज्ञान है जो कि शांति को प्रस्तुत करते हैं और उसे प्राप्त करने का मार्ग है।

- **डा. सुरेश चन्द श्रीवास्तव (Dr. Suresh Chand Srivastva, 1998)** अपनी पुस्तक **"पातंजलयोगदर्शनम् व्यासभाष्य संवलितम"** योग दर्शन की महीमा का वर्णन करते हुए लिखते है कि वेदांत को छोड कर अन्य सभी भारतीय दर्शन ज्ञान जनक योग के परे 'असम्प्रज्ञात' योग की उच्च भूमि तक नहीं पहुँच पाते, जिससे की पुरूषतत्व का साक्षात दर्शन होता है। यह योग वृत्तिज्ञान का अतिक्रमण कराता है, सद्यः मुक्तिप्रद होता है, प्रारब्धाकर्मो के संस्कारो का भी तत्काल नाश करता है ओर इस प्रकार बौद्धिक ज्ञान का साध्य बनता है। इस अदुभुत एवं सर्वातिसायी योग का पूर्ण निरूपण ओर सविस्तार विवेचन योगदर्शन की अपनी एकान्तिक उपलब्धि है।

- **स्वामी सत्यानन्द सरस्वती** (Swami Satyananda Saraswati, 1994) द्वारा पातंजल सूत्रों पर अपनी अनुभूतिपूर्ण दृष्टि **"मुक्ति के चार सोपान"** पुस्तक के रूप में वर्णित है। जिसमें योग सूत्र में वर्णित सूत्रों को जनसामान्य के लिए सहज भाषा में प्रस्तुत कर सुग्राह्य बना दिया है। स्वामी जी बताते हैं कि महर्षि पतंजलि के द्वारा बताये गये मुक्ति के चार सोपान-समाधिपाद, साधनापाद, विभूतिपाद और कैवल्यपाद, क्रमशः एक पाद से दूसरे पाद में तथा एक सूत्र से दूसरे सूत्र पर अत्यंत निर्दोष तार्किकता के साथ बढ़ते हैं। उनका प्रत्येक शब्द अर्थपूर्ण तथा प्रसंगानुकूल है।

- **डॉ. विमला कर्णाटक (Dr. Vimla Karnatak, 1992)** द्वारा पातंजल योग दर्शन की परिवर्ती रचनाएं, व्यासभाष्य, तत्ववैशारदी और योगवार्तिक को संकलित कर अपने अतिदुर्लभ कार्य

को पूर्ण किया है। इन्होंने योग दर्शन के प्रत्येक खण्ड के लिए **"पातंजलयोगदर्शनम् तत्ववैशारदी-योगवार्तिकेतिटीकाद्वयोपेतं व्यासभाष्यम् (सपाठभेदबालप्रियाऽऽख्या हिन्दी-व्याख्यया विभूषितम्)**''नामक अपने कार्य को प्रकाशित किया है। यह कार्य चार खण्डों में हैं।

- **स्वामी कुवल्यानन्द** (Swami Kuvalyananda, 21-08-1953) द्वारा **Can yoga help elimination of war?** नामक विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया, जो अपने आप में असाधारण था। उन्होंने कहा कि सैकड़ों वर्षो के व्यतीत होने के पश्चात भी व्यक्ति की स्वाभाविक युद्ध प्रवृत्ति (Fighting Machnism) जो कि संतुष्टि के लिए ललायित रहती है, जिसके कारण द्वन्द की स्थिति व्यक्तिगत और राष्ट्रीय स्तर पर उत्पन्न हुयी है। अधिकार भाव के कारण क्रोध के लिए आधार बना है, जिसके कारण मनुष्य सहज ही युद्धात्मक शैली की ओर उन्मुख हुआ है। गहन् प्रयोग पर आधारित ठोस वैज्ञानिक परीक्षण के आधार पर पुष्ट होता है कि प्राणायाम और ध्यान के माध्यम से संवेदनाओं का संवर्द्धन होता है। इस प्रकार यह युद्ध और द्वन्द को समाप्त करने में सहायक है। महर्षि पतंजलि ने प्रत्येक मानव जाति के प्रति कोमल स्वभाव रखने के लिए, चित्त प्रसादन के लिए विभिन्न प्रकार के उपाय बताये हैं। युद्ध एक वैश्विक समस्या है । इसलिए युद्ध की प्रक्रिया को समाप्त करने के लिए योगिक संस्कृति को सम्पूर्ण विश्व में फैलाने के लिए सामूहिक कदम उठाना चाहिए।

विज्ञान, अध्यात्म और वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के संदर्भ में केवल भारतीय अध्यात्म विशेषज्ञ और मर्मज्ञ ही अपनी व्याख्या और मत प्रस्तुत नहीं करते, इस संदर्भ में वर्तमान समय के आधुनिक वैज्ञानिक भी अपना मत प्रस्तुत करते हैं। इनमें से कुछ विशेषज्ञों द्वारा प्रस्तुत ग्रंथ और उनके मत का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत है।

- **पॉल डेविस (Paul Davies, 1992), "The Mind of God"**,(ईश्वर का मन) ग्रंथ में सृष्टि के निर्माता ईश्वर की व्याख्या विभिन्न तार्किक आधार पर करते हैं । वे प्रारम्भ भौतिक नियमों/सिद्धान्तों की पृष्ठभूमि में करते हैं। गणित, कम्प्यूटर विज्ञान एवं विशेष रूप से संगणन के आधार पर इनकी व्याख्या करते हैं। वे भौतिक सीमाओं से परे ईश्वरीय अस्तित्व को दार्शनिक तथ्यों के आधार पर सिद्ध करते हैं।

  निष्कर्ष पूर्वक स्पष्ट करते हैं कि ईश्वर का सम्यक बोध भौतिकी से परे अतार्किक ज्ञान (रहस्यवादी, गुह्यवादी ज्ञान) द्वारा ही संभव है।

- **पॉल डेविस (Paul Davies, 1984), "God and the New Physics"** ग्रंथ में, हमारी जिज्ञासा के बृहद् दार्शनिक प्रश्नों को, आधुनिक भौतिकी के आधार पर स्पष्ट करते हैं। ब्रह्माण्ड कैसे कार्य करता है? यह कैसे प्रारंभ हुआ? ब्रह्माण्ड का अस्तित्व क्यों है? क्या भगवान है, यदि है तो क्या उसकी कोई सीमाएँ है? क्या भौतिकी के नियम अलग हो सकते हैं? नियमों को किसने बनाया? हम यहाँ क्यो हैं? क्या जीवनरहित कोई ब्रह्माण्ड है? इनमें से कई प्रश्न अनुत्तरित हैं।

निष्कर्ष पूर्वक वह यह स्पष्ट करते हैं, कि इन प्रश्नों का तार्किक उत्तर आधुनिक भौतिकी की सहायता से लोग समझ सकते हैं, कि वास्तव में उनकी दार्शनिक जिज्ञासा की कितनी गहराई है।

- **फिट्जौफ कॉपरा (Fritjof Capra,1982) अपनी पुस्तक,"Tao of Physics"** में क्वांटम भौतिकी और पूर्वी रहस्यों के बीच एक सम्बन्ध स्थापित करते हैं। वर्तमान समय के सांस्कृतिक संकट का कारण चेतना के दो स्तरों में असंतुलन को मानते हैं, जिसे प्राचीन काल से मानवीय गुणों के आधार के रूप में जाना जाता है, वह सामान्य रूप से तार्किक क्षमता और अर्न्तप्रज्ञा है। वह एक व्यवस्थित और क्रमबद्ध रूप से क्वांटम भौतिकी के आशय को स्पष्ट करते हैं, और फिर क्रमबद्ध रूप से हिन्दूवादी, बुद्धवादी और चीनी विचारों, ताओ और झेन (Tao and Zen) के सम्बन्ध में विचार प्रस्तुत करते हैं।
  प्रत्येक उपरोक्त पूर्वी रहस्यमयी प्रणालियों के साथ क्वांटम भौतिकी की जो सामानान्तरता है, उसकी विशद् व्याख्या करते हैं। ब्रह्माण्डीय नृत्य नामक(The Cosmic Dance page no.272) अध्याय में ब्रह्माण्ड नृत्य के रूपक की, प्राचीन पौराणिक मान्यताओं (शिव का ताण्डव नृत्य, शिव शक्ति की दिव्य क्रीड़ा) तथा आधुनिक भौतिकी के साथ एकरूपता सिद्ध करते हैं।

इस प्रकार वे पूर्वी अध्यात्म और आधुनिक विज्ञान के बीच समानान्तरता और एकरूपता के सम्बन्ध सूत्रों को सिद्ध करते हैं।

- **शोध की समस्या** - पातंजल योग सूत्र में वैज्ञानिक अध्यात्मवाद का संप्रत्यय और प्रारूप निर्धारित करना।

- **शोध समस्या का औचित्य** - पातंजल योग दर्शन के संदर्भ में विभिन्न भाष्य, टीका एवं व्याख्याएँ बड़े ही विद्वतापूर्ण और सहज शैली में पूर्ण की गई है, परन्तु अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय को आधार मानकर वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के सम्प्रत्यय और प्रारूप का पातंजल योग सूत्र के अनुरूप पूर्ण कर एक मौलिक कार्य को पूर्ण करने का शोधकर्ता का प्रयास है। यह कार्य अध्यात्म का वैज्ञानिक प्रस्तुतिकरण करने में सक्षम है। अतः शोधकर्ता ने इस शीर्षक के साथ शोध कार्य का चयन किया है। यह कार्य नये आयाम को प्रस्तुत करता है।

- **शोध के उद्देश्य** - इस शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित है -
  - विज्ञान और अध्यात्म- प्रत्येक का स्वरूप स्पष्ट कर दोनों के समन्वय कर वैज्ञानिक अध्यात्मवाद का भारतीय दर्शन के महत्वपूर्ण अंग पातंजल योग दर्शन में इसका संप्रत्यय एवं प्रारूप निर्धारित करना एवं मानव कल्याण के लिए आध्यात्मिकता को बढ़ावा देना।
  - व्यक्ति के आंतरिक गुणों का विकास और संवर्द्धन, व्यक्तित्व निर्माण।
  - मानसिक प्रदूषण की रोकथाम और अंधविश्वास का अंत करने की दिशा में कार्य।
  - धर्म निरपेक्षता की दिशा में समाज का ध्यान आकर्षित करना।

- बढ़ते धार्मिक प्रदूषण और अवांछनीयताओं को समाज से हटाने की दिशा में प्रयास।
- धार्मिक अनुशसन की रिक्तता के कारण व्यक्ति में बढ़ती अनैतिकता, अकर्तव्यता को समाप्त करने का प्रयास।
- बहिर्जगत के साथ अंतर्जगत का भी विकास संभव ऐसी संभावनाओं को साकार रूप देना।
- युद्ध एवं संघर्ष जैसी परिस्थितियों को टालना।
- प्राकृतिक संसाधनों का सदुपयोग।
- पातंजल योग दर्शन में विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय के संदर्भ में अवगत कराना।
- पातंजल योग दर्शन में वर्णित वैज्ञानिक अध्यात्मवाद का व्यवहारिक प्रस्तुतिकरण स्पष्ट करना।

• शोध विधि -

- प्राथमिक स्त्रोत के रूप में पातंजल योग दर्शन के संदर्भ में विभिन्न भाष्यों, टीकाओं, व्याख्याओं का गहन अध्ययन कर, शोधकर्ता सर्वप्रथम कियापरक, भावपरक, विज्ञानपरक, व्यवहारपरक सूत्रों को चयनित करेगा।
- वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के संप्रत्य एवं प्रारूप को स्पष्ट करना।
- वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के अनुरूप पतंजलि योग सूत्रों का निर्धारण करना।
- पांतजल योग सूत्र में वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के संप्रत्य एवं प्रारूप को स्पष्ट करना।

• प्रस्तावित शोध कार्य की योजना

उपरोक्त उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए शोध अध्ययन को 7 अध्यायों में विभाजित किया गया है। विश्वास है प्रस्तावित शोध प्रबंध की कार्य योजना अपनी सम्पूर्ण दृष्टि के कारण शोध कार्य के सार्थक स्वरूप को अभिव्यक्ति देगी। शोधार्थी का मत है कि उनके द्वारा किया जा रहा यह प्रयास आज के बहुआयामी चिंतन को एक नयी दिशा देने तथा मानवीय जीवन की गरिमा को स्पष्ट करने में सार्थक सिद्ध होगा।

अध्याय - 1 विषय प्रवेश में पातंजल योग सूत्र से सम्बन्धित टीकाओं, ग्रंथों और व्याख्याओं का वर्णन किया जायेगा तथा वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के संप्रत्य एवं वर्तमान समय में उपयोगिता एवं महत्व को स्पष्ट किया जायेगा । **अध्याय - 2** में अध्यात्म अर्थात् चेतना और विज्ञान, उसे प्रभावित करने वाले कारकों को महर्षि पतंजलि अपने योग सूत्रों में किस प्रकार वर्णित करते हैं, स्पष्ट किया जायेगा। **अध्याय - 3** में महर्षि पतंजलि अपने योग सूत्रों में अध्यात्म के वैज्ञानिक प्रयोगों को किस प्रकार स्पष्ट करते हैं, बताया जायेगा। **अध्याय - 4** पातंजल योग सूत्र में मानव चेतना को पूर्णतः प्रभावित करने वाली वैज्ञानिक प्रक्रियाओं का वर्णन किया जायेगा। **अध्याय - 5** में मानव चेतना को प्रभावित करने वाले सूत्रों से चेतनात्मक परिवर्तनों को स्पष्ट किया जायेगा। **अध्याय - 6** में योग सूत्रों में वैज्ञानिक अध्यात्म के प्रारूप को निर्धारित किया जायेगा। **अध्याय -7** में सभी अध्यायों से प्राप्त तथ्यों की समीक्षा कर स्पष्ट किया जायेगा।

प्रस्तुत शोध कार्य में निम्न अध्याय होंगे-

- अध्याय - 1 : विषय प्रवेश
- अध्याय - 2 : पांतजल योग सूत्र में अध्यात्म और विज्ञान
- अध्याय - 3 : पांतजल योग सूत्र में 'वैज्ञानिक अध्यात्म ' का संप्रत्यय
- अध्याय - 4 : पांतजल योग सूत्र में अध्यात्म की वैज्ञानिक प्रकिया
- अध्याय - 5 : पांतजल योग सूत्र में वैज्ञानिक अध्यात्म की प्रकिया के परिणाम
- अध्याय - 6 : पांतजल योग सूत्र में 'वैज्ञानिक अध्यात्म' का प्रारूप
- अध्याय - 7 : उपसंहार

•संदर्भ सूची

सन्दर्भ सूची:

1. आचार्य, पं. श्रीराम शर्मा - सांख्य दर्शन एवं योग दर्शन - वेदमाता गायत्री ट्रस्ट , हरिद्वार, 2000
2. कर्णाटक, डॉ. विमला- पातंजलयोगदर्शनम् तत्ववैशारदी-योगवार्तिकेतिटीकाद्वयोपेतं व्यासभाष्यम् (सपाठभेदबालप्रियाऽऽख्या हिन्दीव्याख्यया विभूषितम्), रत्ना पब्लिकेशन्स, बनारस, 1992
3. खण्डेलवाल, डॉ. उषा - आध्यात्मिक मान्यताओं का वैज्ञानिक प्रतिपादन , शान्तिकुंज, हरिद्वार. 1997
4. गोयनका, हरिकृष्ण - पातंजलयोगदर्शन (भास्वती टीका) - गीता प्रेस गोरखपुर सं. 2059.
5. तीर्थ, स्वामी ओमानन्द - पातंजल योग प्रदीप, गीता प्रेस गोरखपूर. सं. 2062
6. द्विवेदी, प्रतिभा - योगप्रतिभा, राधा पब्लिकेंशन्स, नई दिल्ली, 2000
7. पण्डया, डॉ. प्रणव - अन्तर्जगत की यात्रा का ज्ञान विज्ञान, वेदमाता गायत्री ट्रस्ट हरिद्वार. 2006
8. ब्रह्मवर्चस - आचार्य पं. श्रीराम शर्मा वांगमय -23, विज्ञान और अध्यात्म परस्पर पूरक, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा.1995
9. ब्रह्मवर्चस - आचार्य पं. श्रीराम शर्मा वांगमय -24,भविष्य का धर्म वैज्ञानिक धर्म, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा.1995
10. महर्षि वेद व्यास - श्रीमद्भगवद् गीता, गीताप्रेस गोरखपुर, संवत 2062, संस्करण - 57
11. वानप्रस्थी, रामदत्त- योगदर्शन, बालमुकुन्द रेहजा, रोहतक रोड, नई दिल्ली, 1966
12. सरस्वती, स्वमी सत्यानन्द - मुक्ति के चार सोपान, बिहार योग विद्यालय, मुंगेर - सस्करण 1994
13. स्वामी हरिहरानन्द आरण्य - पातंजलयोगदर्शनम् -(व्यास भाष्य - हिन्दी अनुवाद तथा सुविशद व्याख्या) मोतीलाल बनारसी दास, 2000.
14. सिंह, राजेन्द्र - आधुनिक युग में अध्यात्म, कृपाल पब्लिकेशंस स्परिचुअल सोसायटी - कृपाल आश्रम, विजय नगर - नई दिल्ली 110009, चतुर्थ संस्करण, 1999
15. श्रीवास्तव, डा. सुरेशचन्द्र - व्यास भाष्य संवलितं पातंजलयोगदर्शनम्, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन - वारानसी संस्करण - 1998.
16. Arya Surendra Kaur- Psychology in Yoga Darshana, Indian Foundation For Vedic Science, Sector-1, Rohtak (Haryana)
17. Capra Fritjof- Tao Of Physics, Flamingo 77-85, Fulham palace road, London- Third Edition -1982
18. htpp://www.amazon.com/God-New-Physics-Paul-Davies
19. http://danyreviews.com./h/The_Mind_of_God.html

पत्र एवं पत्रिकाएँ :

1. अग्रवाल राधाशरण - विज्ञान तथा अध्यात्म-एक दूसरे के पूरक हैं अथवा विरोधी ?, साकल्य रश्मि, फर-मार्च 2003, पृष्ठ 76 - 77
2. आचार्य, पं. श्रीराम शर्मा - सबसे पहले अध्यात्मवाद की शिक्षा प्राप्त कीजिए, अखण्ड ज्योति, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, जनवरी 1947, पृष्ठ-1
3. आचार्य, पं. श्रीराम शर्मा - जीवन का सर्वोपरिलाभ, अखण्ड ज्योति, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, जनवरी 1947, पृष्ठ-3
4. पण्ड्या डॉ. प्रणव (2002)- चेतना विज्ञान - अंतर्जगत् के दो विशिष्ट वैज्ञानिक, अखण्ड ज्योति, मार्च, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, 2002, पृष्ठ -45- 46
5. पण्डया डॉ. प्रणव - युग पुरुष पं. श्रीराम शर्मा आचार्य : वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के जन्मदाता, अखण्ड ज्योति, दिसम्बर, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, 1992, पृ- 54-55
6. Ayangar B.K.S., Yoga & Peace, Yoga Mimamsa, Oct 1998, Kaivlyadhama Lonawala, Maharastra, Page 22-26
7. Joshi Kalidas – Human Mind in Patanjali's Yoga Sutra: How for Present Day Psychology Corroborates?, Yoga Mimamsa, Oct 2004, Kaivlyadhama Lonawala, Maharastra, Page 251-254
8. Joshi K.S. – Patanjali & J.S. Krishnamurthy: How Far ? How Near?, Yoga Mimamsa, April 1998 , Kaivlyadhama Lonawala, Maharastra, Page 59-65
9. Rao Sethu & Madhav V.S.- Altered Consiousness Pathology & Treatment, Yoga Mimamsa, Oct 2003- Jan 2004, Kaivlyadhama Lonawala, Maharastra, Page 251-254
10. Sahay G.S.- Patanjali as An Educationist, Yoga Mimamsa, Jan 1988, Kaivlyadhama Lonawala, Maharastra, Page 1-4
11. Swami Kuvlayananda, Can Yoga Help Elimination of War?, Yoga Mimamsa, Oct 1998, Kaivlyadhama Lonawala, Maharastra, Page 1-7